राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

धर्मः सर्वास्ववस्थासु, वस्तुनोऽस्ति सुरक्षकम् ।
सौन्दर्यं सकलं तस्मिन्, निहितं किं न विद्यते ? ॥१६१॥

धर्म सभी अवस्थाओं में वस्तु की सुरक्षा करने वाला होता है । समस्त सौन्दर्य क्या उस धर्म में निहित नहीं है ?

Dharma protect the thing in every state. Isn't all the beauty also then inherent/vested/contained in that dharma?

चित्रगुप्तं विना नैव, यमस्य यमता क्वचित् ।
व्यासस्यापि च विख्यातौ, श्रीगणेशः सहायकः ॥१६२॥

बिना चित्रगुप्त के यमराज की कहीं यमराजता नहीं है और वेदव्यास की विख्याति में श्रीगणेश जी महाराज सहायक हैं ।

The Yama (king of Death) cannot rule without Chitragupta (writer of destiny) and Ganesh is the helper in Vedvyasa's fame (to make Vedvyasa famous).

चेदीशो बलितस्तुष्येत्, स्वबलिः किं न दीयताम् ?।
मूकानां किं बलौ शौर्यं, स्वेषां दत्वा तु दृश्यताम् ॥१६३॥

यदि ईश्वर बलिदान से सन्तुष्ट होता है तो अपनी बलि क्यों नहीं दी जाय ? बेचारे मूक जन्तुओं की बलि देने में क्या शूर-वीरता है ? जरा अपनों की बलि देकर तो देखो ।

If God is satisfied with a sacrifice, then why one does not sacrifice oneself? Where is the bravery in sacrificing voiceless animals? See for yourself by sacrificing yourself.

छलं छद्म परित्यज्य, सद्भावः परस्परम् ।
यावन्नैव विधीयेत, तावच्छान्तिः सुखं न च ॥१६४॥

छल छद्म त्याग कर जब तक परस्पर सद्भाव स्थापित नहीं किया जाता, तब तक शान्ति और सुख भी नहीं मिलता हैं ।

There will be no peace and happiness till cheating and pretenceare not renounced and harmony established.

जगत्प्रकाशकं वस्तु, केवलं चक्षुरिन्द्रियम् ।
समृद्धिरपि सम्पूर्णा, तच्छून्याय निरर्थिका ॥१६५॥

जगत् को प्रकाशित करने वाली वस्तु केवल नेत्रेन्द्रिय ही हैं। उस नेत्रेन्द्रिय से शून्य व्यक्ति के लिये तो सम्पूर्ण समृद्धि भी निरर्थक रहती है ।

The things that give light to the world depend on the eyes. For the person without eyes all wealth become pointless.

जडमेव वरं वस्तु, युध्यते यद् मिथो नहि ।
विचारी तु मनुष्योऽयं, संघर्षे हि सदा रतः ॥१६६॥

जड़ वस्तु ही अच्छी है जो आपस में लड़ती झगड़ती तो नहीं है । विचारधारी यह मनुष्य तो सदा संघर्ष करने में लगा रहता है ।

Inert objects are good as they don't fight with each other. The human is always in some conflict because of thinking.

जनतां तोषयेद् यो न, किं स विन्देद् यशः श्रियम् ? ।
श्रीयुतोऽपि यशोहीनो, भस्त्रावत् स जीवति ॥१६७॥

जो जनता को सन्तुष्ट नहीं करे, क्या वह यश-श्री को प्राप्त कर सकता है ? श्री – सम्पन्न भी वह यश से शून्य बना हुआ धौंकनी की भाँति ही जीता है ।

Can the one who does not satisfy people achieve fame and money? But money acquired without fame is (empty) like a bellow.